International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 11 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

ग्रामीण विद्यालयों में आरंभ की गई पोषण स्वास्थ्य एवं शिक्षा परियोजना : एक अध्ययन

आरती कुमारी
शोध छात्रा
विश्वविद्यालय गृह विज्ञान विभाग,
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

भोजन लेने की आदतों का रूपांतरण एक जटिल तथा दीर्घकालीन कार्य है। यह इस बात पर बल देता है कि किस प्रकार भोजन लेने की आदते बदलनी है ना कि उन्हें किस प्रकार बदलना चाहिए। भोजन पर सांस्कृतिक मूल्यों कि दबाव के कारण यह माना जाता है कि उनमें परिवर्तन लाना विशेष रूप से कठिन है। रूपान्तर प्रायः इन अनुभूति के माध्यम से प्राप्त किया जा सका है कि आहार पद्धति में परिवर्तन उसी सांस्कृतिक संदर्भ में लाना चाहिए जिसमें वे आदते बनी है। यह इसलिये आवश्यक है क्योंकि भोजन की आदते गतिशील होती है। अतः परिवर्तन के आर्थिक और सामाजिक सांस्कृतिक खतरों के होते हुए भी आदतों को परिवर्तन किया जा सकता है। महिलाओं की भूमिका विशेष ध्यान देने योग्य है क्योंकि विश्व के बहुत से भागों में अब भी घर के लोगों की पोषण एवं आहार पद्धति अधिकतर महिलाओं द्वारा ही नियंत्रित होती है।

ग्रामीण विद्यालय प्रणाली– आप हमारे देश में ग्रामीण बालकों को प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाला एक विस्तृत बुनियादी ढ़ांचा उपलब्ध है। एक अनुमान के अनुसार हमारे ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में (कम प्रवेश व बीच में ही विद्यालय छोड़ने वालों की अधिक संख्या होते हुये भी) गांव में शिक्षा पाने वालों की कुल संख्या 550 लाख है। यह विद्यालय इस प्रकार सिथत है कि प्रत्येक गांव से एक किलोमीटर की दूरी पर एक विद्यालय है इस प्रकार औसतन 1500 की जनसंख्या के लिए एक विद्यालय है।

यह कि आंकड़े प्रभावशाली है तो भी हमें अपनी वर्तमान ग्रामीण विद्यालय प्रणाली में उपस्थित सुस्पष्ट कमियों को भी ध्यान रखना चाहिए। जिन भवनों में

विद्यालय है वे अधिकतर कामचलाउ अपर्याप्त तथा अस्वस्थ है। अधिकतर विद्यालयों में स्वच्छ शौचालय सुविधा तथा स्वच्छ पेयजल की कमी है। विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या भी कम है। बहुत से केवल एक ही शिक्षक है तथा शिक्षक भी एक आदर्श, समर्पित तथा शिक्षण के प्रति प्रेरित नहीं है। शिक्षा व्यवस्था की भूमिका तथा ग्रामीण विद्यालय प्रणाली के गुण–दोषों की चर्चा निम्नलिखित भागों में की गई है।

शिक्षा प्रणाली की भूमिका– हमारी शिक्षा पद्धति में विशेषकर स्वास्थ्य शिक्षा के संदर्भ में बहुत सारी कमियाँ है। हमारे पोषण वे स्वास्थ्यकर्मी प्रायः यह सोचते है कि वह जरूरतमंद समूहों को अधिक प्रभावशाली तथा व्यवहारिक सेवाएं दे रहे हैं किन्तु पूरे समुदाय तक पहुँचन के लिए यह प्रर्याप्त नहीं है। समुचित कार्यनतियाँ अपनाकर पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव को बढ़ाने की आवश्यकता है। यह शिक्षा प्रणाली स्वास्थ्य शिक्षा पर अधिक बल तथा बेहतर ध्यान केन्द्रि कर सकती है।

व्यक्तिगत स्वच्छता तथा पोष्टिक अहार लेने की अच्छी आदते व बचपन व योवन काल जो प्रभावशाली व निर्णायात्मक वर्ष होते है। उसी समय डालनी चाहिए। केवल रोग न होना ही स्वास्थ्य नहीं है बल्कि यह एक सकारात्मक गुण है। जो उसी आदतों तथा व्यवहारों के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग है। ऐसी आदते केवल निर्देशों से नहीं बल्कि निरंतर शैक्षक प्रयासों की बुनियाद आधार शिला सेवा के बजाए हमारी शिक्षा के माध्यम से ही रखी जानी चाहिए।

ग्रामीण प्रणाली के लाभ–सुस्पष्ट कमियों के होते हुये भी हमारे देश की ग्रामीण विद्यालय प्रणाली हमें एक तैयार ढ़ांचा तथा प्रभावशाली सघन एवं सुविधाएं प्रदान करती है। थोड़ी सी कल्पना, सुझ–बुझ, सिपुर्दगी प्रशासकीय योग्यता और इन सबसे अधिक राजनीतिक इच्छा होने से हमारी प्रणाली हमारे ग्रामीणाचल की काया पलटने में एक शक्तिशाली यन्त्र का काम कर सकती है। केवल विद्यार्थियों पर ही नहीं उपितु विद्यालय के बाहर के बालकों पर भी एक गहन प्रभाव छोड़ सकती है। ग्रामीण विद्यालय प्रणाली बुरे स्वास्थ्य तथा कुपोषण से लड़ने की सर्वश्रेष्ठ रणनीति बन सकती है।

विद्यालयों में आरंभ की गई पोषण परियोजना–ग्रामीण विद्यालय प्रणाली के उपर्युक्त गुणों को देखते हुये भारत सरकार ने 1975 में पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं प्रर्यावरण स्वच्छता परियोजना (NHEES) को आरंभ किया। इस परियोजन

का लक्ष्य चाहे कुछ भाग में ही ग्रामीण विद्यालयों की विशाल क्षमता का उपयोग करना है। इस परियोजना का समन्वण राष्टीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (छभ्म्मै) नई दिल्ली द्वारा किया जा रहा है तथा इसका सारा व्यय युनिसेफ द्वारा वहन किया जा रहा है।

ऐसा नहीं है कि इससे स्वास्थ्य पोषण शिक्षा प्राथमिक पाठ्यक्रम का अंग न रहा हो। पोषण स्वास्थ्य शिक्षा तथा पर्यावरण स्वच्छता परियोजना ने स्वास्थ्य एवं पोषण के भाग को प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में और अधिक ध्यान देने तथा एक उददेश्यपूर्ण दिशा प्रदान करने का प्रयास ही किया है। ग्रामीण विद्यालय प्रणाली में और अधिक उददेश्यपूर्ण दिशा प्रदान करने का प्रयास किया है। ग्रामीण विद्यालय प्रणाली द्वारा समुदाय तक पहुँचने का प्रयास संभवतः पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं पर्यावरण स्वच्छता (NHEES) परियोजना का सर्वाधिक साहसी तथा नवीन अंग है।

इस परियोजना के मुख्य उददेश्य निम्न है–

- विद्यार्थियों में तथा उन समुदायों में जिनसे वह विद्यार्थी आते हैं वांछनीय पोषण/स्वास्थ्य/पर्यावरण/स्वच्छता/व्यक्तिगत स्वास्थ्य विज्ञान व्यवहार को विकसित एवं प्रोत्साहित करना।
- बच्चों तथा उनके माता–पिता को इस योग्य बनाना कि वह शारीरिक तथा मानसिक विकास के लिए प्रयाप्त पोषण की आवश्यकता को समझ सके।
- बच्चों को उन व्यवहारिक तरीकों की शिक्षा देना जिससे वह अपने संस्थानों द्वारा ही पोषण की जब आपूर्ति गांव में उपलब्ध साद्य पदार्थों का उचित चुनाव संरक्षण तथा पकाव द्वारा कर सके।
- जब तक संभव को शिशु को स्तनपान कराए तथा बोलते से दूध दिलाने से बचे।
- चौथे महीने से पूरक आहार देना प्रारंभ कर दे।
- यथाशीघ्र शैशावस्था के समय ही शिशु का टीका लगवा लें।
- बच्चे को पारिवारिक आहार में विभिन्न प्रकार के उपलब्ध आहार समूहों को प्रयाप्त मात्रा में इस प्रकार सम्मिलित करे कि वह समान रूप से तीनों समय के भोजन में शिशु को मिलते रहे।
- भोजन पकाने तथा पीने के लिए स्वच्छ तथा सुरक्षित जल का प्रयोग करें।

- गांव तथा विद्यालय में थूकने पेशाब करने तथा शौच कि सुविधाएं उपलब्ध कराए स्थानों के अतिरिक्त और कहीं पर न थुके न पेशाब करें तथा न ही शौच करें।
- अपने घर विद्यालय तथा गांव के आस–पास के स्थान को स्वच्छ रखें। कूड़े तथा पशु मल को खाद बनाने वाले गडढ़े में डालें।
- जल श्रोतों को प्रदूतिषत न करें।

पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा के संदर्भ में समुदाय सम्पर्क का वर्तमान स्तर संतोषजनक नहीं हैं समुदाय सम्पर्क में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है।

ग्रामीण विद्यालय प्रणाली पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा के संदर्भ में प्रभावशाली सिद्ध होती है। वास्तव में ग्रामीण विद्यालय केवल पोषण स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के लिए हीन हीं बल्कि समस्त संचालित ग्राम विकास कार्यक्रमों के लिए ग्रामीण सामुदायिक केन्द्र बन जाता है। इस कार्यनीति द्वारा पोषण स्वासयि की गतिविधियों में सामुदायिक सहभागिता सरल हो जाती है। इस कार्यनीति को अधिक प्रभावशाली बनाने की लिए ग्रामीण विद्यालयों को अच्छे स्वास्थ्य तथा स्वच्छता का आदर्श नमूना बनना होगा।

संदर्भ सूची :

1. द स्टेट ऑफ वर्ल्डस चिल्ड्रेन यूनिसेफ।
2. द इन्टरनेशनल हयूमेन साफरिंग इन्डेक्स
3. DNHE-3 पोषण एवं स्वास्थ्य शिक्षा

4- मेजरिंग चेंज इन न्यूट्रीशनल स्टेटस WHO

5. सी.पी.एफ.एन. 2 भोजन की उपयोगिता स्कूल पोषण गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय।